Gallery

Itihasvetta Award

Diwan Pritipal Singh Award

Book Release

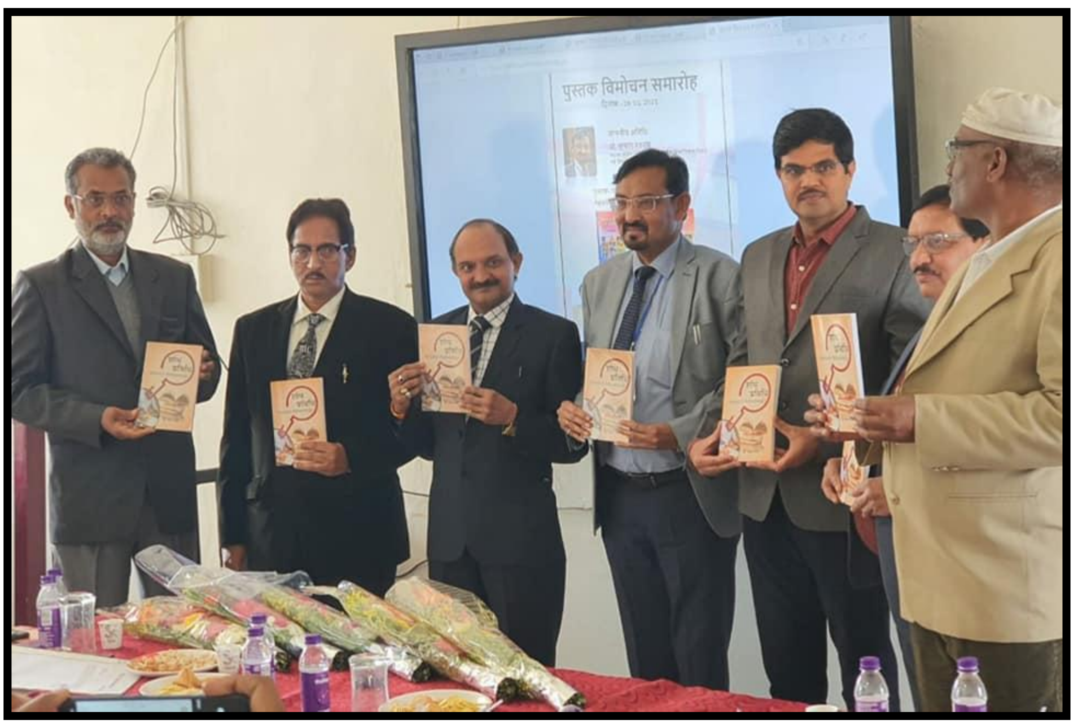

Book Release

Book release in National Seminar

Gour Utsav

Gour Utsav

Photographs of National and International Seminar/ Conference

With ICHR Member Secretary

With Member Secretary, ICHR

Advaita Vedanta- International Conference

Advaita Vedanta- International Conference

With Sujata Mohapatra

National Seminar

Departmental Seminar 2015

Departmental Publications

More than 30 books has been published by the present faculty members of the department during 2015-2020. Photographs of some books are given below

बुन्देलखण्ड की संस्कृति
बी.के.श्रीवास्तव

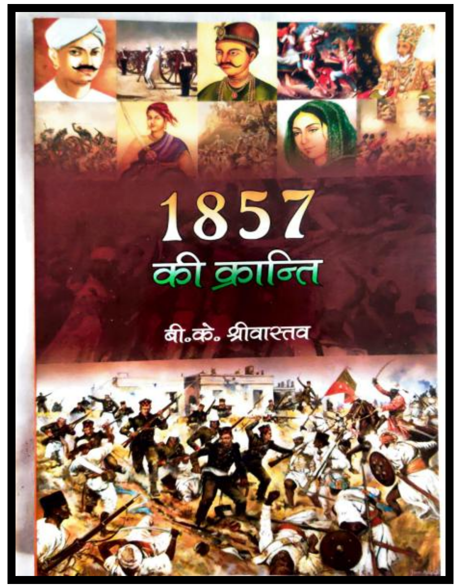
1857
की क्रान्ति
बी.के. श्रीवास्तव

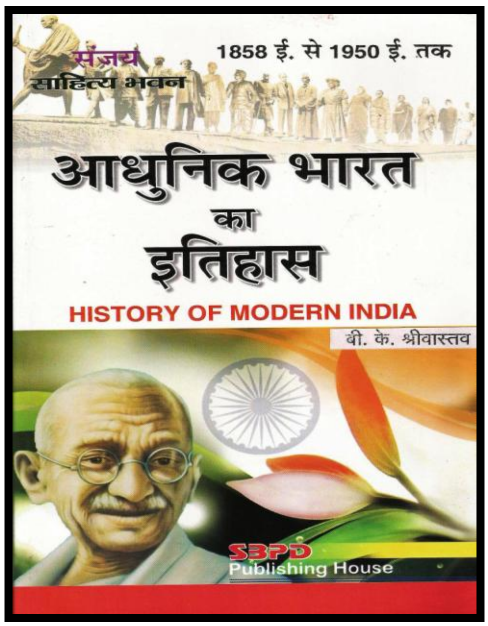
संजय
साहित्य भवन
1858 ई. से 1950 ई. तक
आधुनिक भारत
का
इतिहास
HISTORY OF MODERN INDIA
बी. के. श्रीवास्तव
SBPD
Publishing House

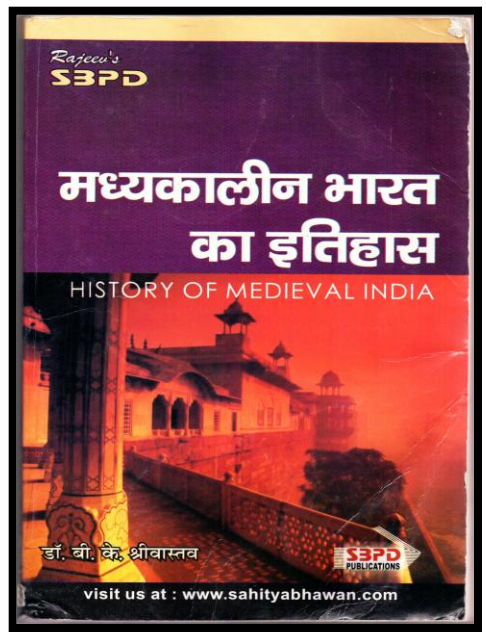
Rajeev's
SBPD
मध्यकालीन भारत
का इतिहास
HISTORY OF MEDIEVAL INDIA
डॉ. बी. के. श्रीवास्तव
SBPD
PUBLICATIONS
visit us at : www.sahityabhawan.com

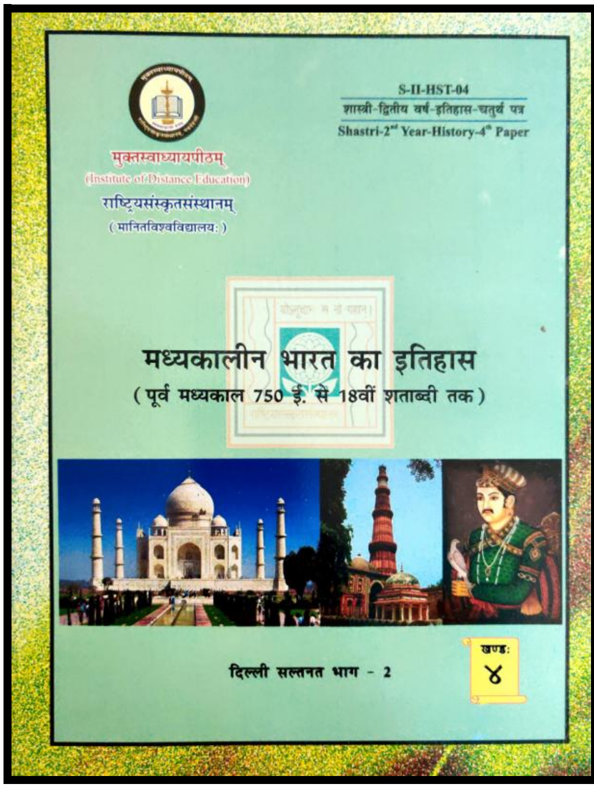
S-II-HST-04
शास्त्री-द्वितीय वर्ष-इतिहास-चतुर्थ पत्र
Shastri-2nd Year-History-4th Paper
मुक्तस्वाध्यायपीठम्
(Institute of Distance Education)
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
मध्यकालीन भारत का इतिहास
(पूर्व मध्यकाल 750 ई. से 18वीं शताब्दी तक)
दिल्ली सल्तनत भाग - 2
खण्डः
४

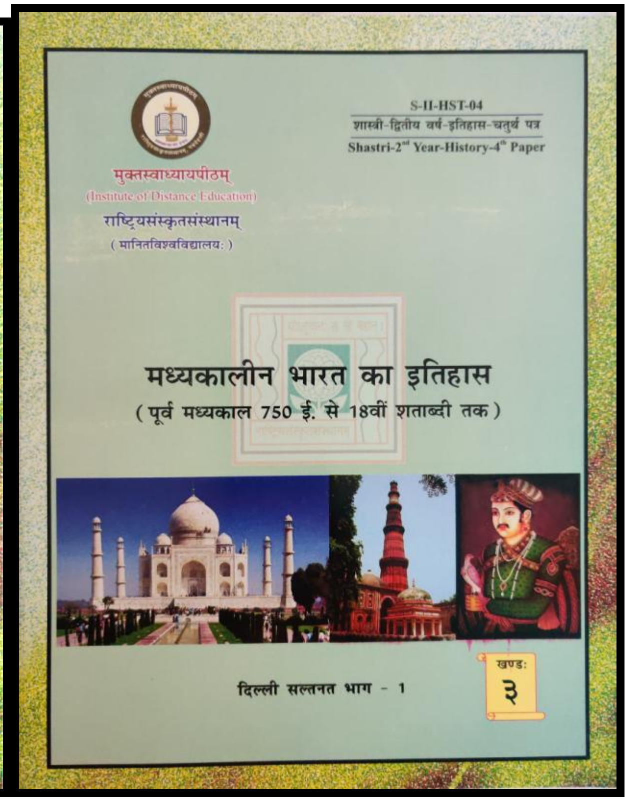
S-II-HST-04
शास्त्री-द्वितीय वर्ष-इतिहास-चतुर्थ पत्र
Shastri-2nd Year-History-4th Paper
मुक्तस्वाध्यायपीठम्
(Institute of Distance Education)
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
मध्यकालीन भारत का इतिहास
(पूर्व मध्यकाल 750 ई. से 18वीं शताब्दी तक)
दिल्ली सल्तनत भाग - 1
खण्डः
३

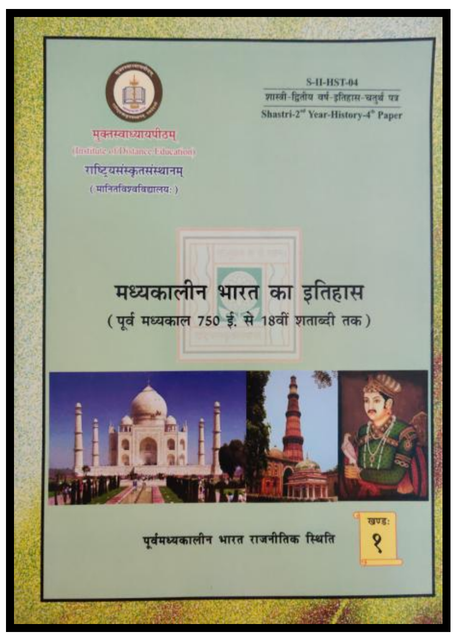
S-II-HST-04
शास्त्री-द्वितीय वर्ष-इतिहास-चतुर्थ पत्र
Shastri-2nd Year-History-4th Paper
मुक्तस्वाध्यायपीठम्
(Institute of Distance Education)
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
मध्यकालीन भारत का इतिहास
(पूर्व मध्यकाल 750 ई. से 18वीं शताब्दी तक)
पूर्वमध्यकालीन भारत राजनीतिक स्थिति
खण्डः
१

New Paper

दैनिक भास्कर - 20 अप्रैल 2015 पृ: 3

ऐतिहासिक लेख एवं कहानियां बुंदेली भाषा में ही लिखें: मड़वैया

अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद के अध्यक्ष ने किया गोष्ठी को संबोधित

सागर। बुंदेली समृद्ध भाषा है। ऐतिहासिक लेख एवं कहानियां बुंदेली भाषा में लिखे जाने चाहिए। बुंदेली भाषा के प्रचार-प्रसार पर चर्चा की जानी चाहिए। यह बात अखिल भारतीय बुंदेलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद के अध्यक्ष कैलाश मड़वैया ने रविवार को परिषद की गोष्ठी को संबोधित करते हुए कही।

श्री मड़वैया ने विश्वविद्यालय के अतिथिगृह में आयोजित परिषद की सागर इकाई की बैठक में कहा कि परिषद के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों में बुंदेली भाषा का ही प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पन्ना नरेश छत्रसाल बुंदेलखंड की एकता के सूत्रधार थे। उन्होंने बुंदेली कवियों को आश्रय दिया। वे स्वयं भी एक कवि थे। हमारा प्रयास होना चाहिए की छत्रसाल को इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने के प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि सागर में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। विश्वविद्यालय एवं शहर के प्रबुद्धजन अपने-अपने स्तर पर महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। आवश्यकता एकजुट होकर कार्य करने की है। ऐसा कर हम बुंदेली भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। सागर इकाई के अध्यक्ष डॉ. बीके श्रीवास्तव ने रानी लक्ष्मीबाई द्वारा मर्दन सिंह को बुंदेली भाषा में लिखे गए पत्रों पर प्रकाश डाला। गोष्ठी में आभार शुभम उपाध्याय ने माना। इस दौरान प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जीपी नेमा, डॉ. विष्णु पाठक, डॉ. मणिकांत चौबे, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. शशि सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, रघु यादव, मनीष लोधी, नीलिमा धाकड़, विधि ताम्रकार सहित बड़ी संख्या में परिषद के सदस्य उपस्थित थे।

सागर बुन्देलखंड साहित्य एवं संस्कृति परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कवि कैलाश मडबैया की विवि गेस्ट हाउस में संगोष्ठी

दैनिक भास्कर

सागर 15-08-2021

समारोह... पुस्तक 'बुंदेलखंड का स्वतंत्रता संघर्ष' का विमोचन हुआ

सागर | अमृत महोत्सव के तहत रवींद्र भवन में हुए कार्यक्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव की पुस्तक बुंदेलखण्ड का स्वतंत्रता संघर्ष का विमोचन मंत्री भूपेंद्र सिंह, विधायक शैलेंद्र जैन, कमिश्नर मुकेश शुक्ला, कलेक्टर दीपक सिंह आदि द्वारा किया गया। प्रो. श्रीवास्तव की इस पुस्तक में भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में सागर एवं बुंदेलखंड के योगदान का विस्तार से वर्णन किया है।

दैनिक भास्कर सागर 29-01-2021

विकास में इतिहास एवं संस्कृति की भी भूमिका

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विवि के इतिहास विभाग में पुस्तक विमोचन समारोह हुआ। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के मेंबर सेक्रेटरी प्रो. कुमार रतनम एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. एडी शर्मा ने इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव की पुस्तक पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग एवं डॉ. पंकज सिंह की पुस्तक शोध प्रविधि का विमोचन किया। डॉ. श्रीवास्तव की पुस्तक की भूमिका प्रोफेसर रतनम द्वारा ही लिखी गई है। प्रो. रतनम ने कहा भारत में पर्यटन स्थलों के विकास के लिए पर्यटन में इतिहास एवं संस्कृति की अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। इतिहास को पर्यटन के उत्पाद के रूप में भी देखा जा रहा है। इसकी विस्तार से विवेचना पुस्तक में की गई है। 'पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग' एवं 'शोध प्रविधि 'एक प्रश्न पत्र के रूप में भारत के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों के इतिहास विषय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में शामिल हैं।

सागर 04 पत्रिका patrika.com
सागर, शुक्रवार, 29 जनवरी, 2021

इतिहास विभाग में हुआ पुस्तक का विमोचन

'पर्यटन स्थलों के विकास में इतिहास एवं संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के मेंबर सेकेट्री प्रोफ़ेसर कुमार रतनम एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर एडी शर्मा ने इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर बीके श्रीवास्तव की पुस्तक पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग एवं डॉ पंकज सिंह की पुस्तक शोध प्रविधि का विमोचन किया।

डॉ बीके श्रीवास्तव की पुस्तक पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग की भूमिका प्रोफेसर के रतनम द्वारा ही लिखी गई है। प्रोफेसर रतनम ने कहा कि भारत में पर्यटन स्थलों के विकास के लिए पर्यटन में इतिहास एवं संस्कृति की अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। इतिहास को पर्यटन के उत्पाद के रूप में भी देखा जा रहा है।

पर्यटन को बढ़ावा देने में इतिहास किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकता है।'स्थानीय संस्कृति के साथ साथ जनजातीय संस्कृति के वे कौन से महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पर्यटन क्षेत्रों का विस्तार एवं विकास स्थानीय रोजगार सर्जन की दृष्टि से क्यों महत्वपूर्ण है। इसकी सविस्तार विवेचना पुस्तक में की गई है। पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग एवं शोध प्रविधि एक प्रश्न पत्र के रूप में भारत के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों के इतिहास विषय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग प्रथम पुस्तक है जो इसी पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी गई है। मध्य प्रदेश पीएससी के पाठ्यक्रम में भी पर्यटन शामिल किया गया है, अतः पीएससी की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी साबित होगी। पर्यटन में डिप्लोमा का पाठ्यक्रम भी इसमें सम्मिलित है। छात्रों के साथ साथ पर्यटन में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए भी पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

इस अवसर पर प्रोफेसर अशोक अहिरवार ,प्रोफेसर नागेश दुबे, डॉ संजय बरोलिया, डॉ प्रीति अनिल खंडारे, डॉक्टरअनिल खंडारे, डॉ नेहा राजपूत डॉ सुल्तान, सहित बड़ी संख्या में विभिन्न विभागों के छात्र-छात्राएं एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

स्व.राजीव गांधी फुटबॉल टूर्नामेंट

नो निगेटिव न्यूज़ दैनिक भास्कर हर सोमवार

सिटी फ्रंट पेज

दैनिक भास्कर, सागर सोमवार, 6 जुलाई, 2015

सागर झील को लाखा बंजारा ने अपने पुत्र व पुत्रवधु का बलिदान देकर सींचा

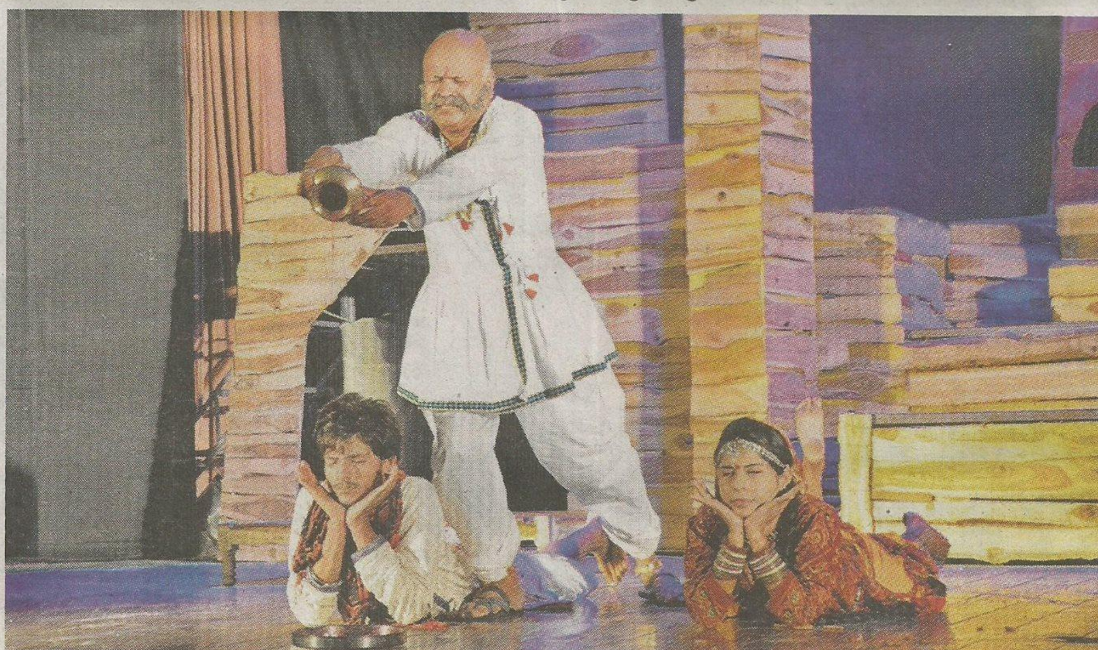

सागर. स्वर्ण जयंती सभागार में नाटक लाखा बंजारा का वह दृश्य जिसमें बंजारों का मुखिया लाखा झील में पानी लाने के लिए अपने पुत्र व पुत्रवधू का बलिदान देता है।

रंगमंच | स्वर्ण जयंती सभागार में सागर झील की दशा पर आईना दिखा गया 'लाखा बंजारा'

लाखा के बलिदान पर दर्शक नतमस्तक

सिटी रिपोर्टर | सागर

मंच पर कुछ बंजारे नजर आ रहे हैं। राजस्थान से चलकर आ रहे यह बंजारे जब बुंदेलखंड की धरती पर कदम रखते हैं तो यहां की आवोहवा से मोहित होकर यहीं अपना पड़ाव डाल देते हैं। कुछ समय बाद परिस्थिति यह बनती है कि क्षेत्र में पानी की कमी हो जाती है। पानी को लेकर त्राहि-त्राहि मच जाती है। बंजारों के पशु मरने लगते हैं। इससे परेशान होकर बंजारे निर्णय लेते हैं कि क्यों न यहां पर झील बनाई जाए।

कुछ इसी अंदाज में रविवार को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में सागर की पहचान लाखा बंजारा झील के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हुए नाटक लाखा बंजारा (ऐतिहासिक झील की कहानी) का मंचन हुआ। आयोजकों ने बताया कि बड़ी संख्या में दर्शकों ने नाटक देखा, जो अब तक की सबसे अधिक संख्या बताई गई है। विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग एवं तथागत थिएटर ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में हुए नाटक की सभी ने खूब प्रशंसा की।

नाटक के दो शो हुए। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. आरपी तिवारी थे। कला गुरु विष्णु पाठक, फिल्म अभिनेता गोविंद नामदेव एवं डॉ. मीना पिंपलापुरे भी यहां मौजूद रहीं। रवींद्र दुबे कक्का ने लाखा का दमदार किरदार निभाते हुए दर्शकों को अभिभूत कर दिया।

लाजवाब स्क्रिप्ट

नाटक के माध्यम से झील के गौरवशाली इतिहास को आम जन तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया गया। विवि के इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ बीके श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में तथागत थियेटर ग्रुप के संचालक शुभम उपाध्याय ने बड़ी खूबसूरती से नाटक को लिखा एवं निर्देशित किया।

झील की दुर्दशा के साथ-साथ सांस्कृतिक पक्ष भी दिखाया

नाटक में बताया गया कि पानी की कमी के कारण बंजारों ने झील को खुदवाया पर झील में पानी नहीं आया तब एक दुस्वप्न में बंजारों के मुखिया लाखा से कहा गया कि यदि वह अपने पुत्र और पुत्रवधू का बलिदान दें तो पानी आ सकता है। उन्होंने ऐसा ही किया। बलिदान के बाद झील में पानी आ गया। झील लबालब पानी से भर गई। नाटक का यह दृश्य देखकर दर्शक नतमस्त हो गए। इसके बाद झील की वर्तमान स्थिति भी दशाई गई। नाटक में बढ़ते प्रदूषण के कारण झील के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह उठाते हुए लोगों को झील के प्रति सोचने पर विवश किया गया।

झील के सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही नाटक में जल संरक्षण के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया। ग्वालियर के वरिष्ठ रंगकर्मी कमल वशिष्ठ को श्रद्धासुमन भी अर्पित किए गए।

डॉ बी के श्रीवास्तव जी
इतिहास विभाग विविलाय

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

सुविचार
विज्ञान हमें सोचना सिखाता है, लेकिन प्रेम हमें मुस्कुराना सिखाता है।

bhaskarhindi.com | छतरपुर, गुरुवार, 25 जनवरी, 2018 | माघ शुक्ल पक्ष-8, 2074

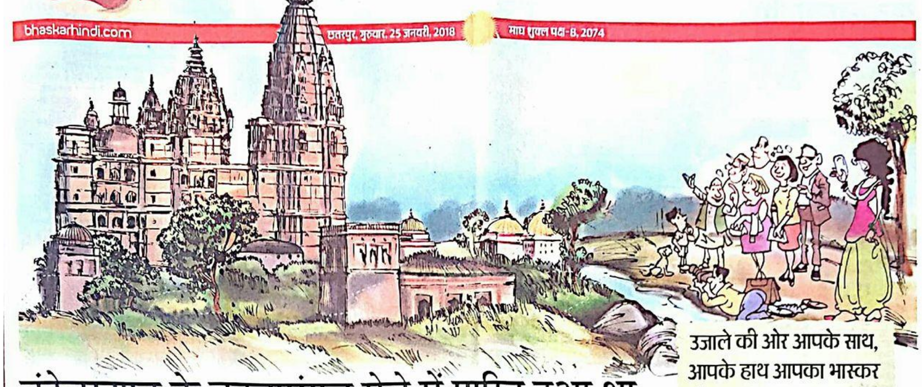

बुंदेलखण्ड के बुढवामंगल मेले में पारित हुआ था भारत की स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव

अखिल भारतीय स्तर पर भारत की स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव बुंदेलखण्ड में बुढवामंगल मेले में पारित हुआ था। इसकी पुष्टि बुंदेलखण्ड के एक महत्वपूर्ण लोक साक्ष्य द्विजकिशोर द्वारा रचित 'पारीछत कौ कटक' से होती है। इस कटक की प्रारंभिक पंक्तियां निम्नानुसार हैं -

पंती प्रबल पहारे के, सब राजन सिरताज।
जाहिर जम्बू दीप में, परीछत महाराज।।
बुढवामंगल कौन, श्री रतनेस नरेश नें।
जुड़े सकल परबीन, कौल भगौती सीस पै।।
बुढ़वामंगल में जुरे, राजन सहित नवाब।
रह न जावै देस में कलकते कौ साव।।

अर्थात पहाड़ सिंह (1758-1765) के पंती (प्रपौत्र) पारीछत महाराज जम्बूद्वीप (भारत) में सभी राजाओं के सिरताज हैं। रतनेस अर्थात चरखारी नरेश रतनसिंह (1820-1857) ने बुढवामंगल मेले का आयोजन किया। इसमें बुंदेलखण्ड के कई प्रवीन राजाओं ने भाग लिया। इन राजाओं ने एक-एक कर मां भगवती (भगौती) के सिर (सीस) पर हाथ रख कर शपथ (कौल) ली कि वे देश (भारत) में कलकत्ते कौ साव अर्थात अंगरेजों को नहीं रहने देंगे। इस तरह बुंदेलखण्ड में आयोजित इस बुढवामंगल में बुंदेलखण्ड के राजाओं ने भारतीय स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव पारित किया।

बुढ़वा मंगल कहां आयोजित हुआ था एवं किसके नेतृत्व में स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव पारित हुआ इसकी जानकारी हमें एक अन्य लोकगीत की इन पंक्तियों में मिलती है -

सबरे राजा जुरे चरखारी,
बुढवामंगल कीन।
पुन सब बैठ जाय गड़ियन में,
पारीछत को मुहरा दीन।।

अर्थात बुढवामंगल चरखारी राज्य में आयोजित हुआ और अंगरेजों के खिलाफ स्वाधीनता आन्दोलन का मोहरा (नेतृत्व) राजा पारीछत को सौंप दिया गया। पारीछत को मोहरे पर लगाकर सभी राजा अपनी-अपनी गाड़ियों में जाकर बैठ गए।

बुढ़वामंगल आखिर क्या था? वस्तुत बुढ़वामंगल एक सांस्कृतिक उत्सव था। यह बुढ़वामंगल बुन्देलखण्ड में अधिक लोक प्रचलित नहीं था। यह वाराणसी (काशी) में प्रचलित था। काशी में नए सम्वतसर पर बुढ़वामंगल मेला लगता था। उसमें विभिन्न क्षेत्रों के राजे महाराजे, बड़े-बड़े कलाकार, संगीतज्ञों के अलावा प्रसिद्ध नर्तकियां आती थीं। गंगा नदी की लहराती धार में नावों से नावें जोड़कर मंच बनाए जाते थे। उन मंचों पर संगीत एवं नृत्य के कार्यक्रमों का आयोजन होता था। मनोरंजन, हास-परिहास क्रय-विक्रय, एवं जैतपुर राजा पारीछत एवं चरखारी नरेश रतनसिंह सहित बुन्देलखण्ड के कुछ प्रमुख राजा सन 1835 में काशी के बुढ़वामंगल मेले में भाग लेने गए। उस समय काशी के राजा ईश्वरी नारायण सिंह थे। यहां भारत के अन्य स्थानों से भी राजे रजवाड़े आए थे। उन्होंने अपने राज्य में अंगरेजों की ज्यादतियों बारे में सबको बताया। बुंदेलखण्ड के राजाओं ने काशी बुढ़वामंगल मेले का जहां एक ओर लुत्फ उठाया हो, दूसरी ओर उन्हें यह भी जानकारी मिली थी कि उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम में अंगरेजों का कैसा-कैसा आतंक एवं अत्याचार फैल रहा है। इसी बुढ़वामंगल में उन्हें यह भी पता चला कि इंग्लैण्ड के पास के देश फ्रांस में अन्यायी राजा लुई सोलहवें को गद्दी से उतार कर फांसी दी गई है। 1789 ई. में फ्रांस में क्रांति सम्पन्न हुई एवं वहां स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारे की लहर प्रचारित होकर प्रजातंत्र स्थापित हो गया। राजाओं ने विचार किया कि यदि ये भी एकजुट होकर प्रयत्न करें तो अंगरेजों को भारत से बाहर खदेड़ सकते हैं।

काशी के बुढ़वामंगल की तर्ज पर 1836 ई. में होली के बाद पहले मंगलवार की बसंती संध्या पर चरखारी में बुढ़वामंगल का आयोजन चरखारी नरेश रतनसिंह के संरक्षण में आयोजित हुआ। इस बुढ़वामंगल में 42 राज्यों के राजा अथवा उनके प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। ये अंगरेजों के कूटनीतिक षड़यंत्र में फंसकर उनसे संधियां कर चुके थे। ये सभी अंगरेजों के आतंक से त्रस्त थे एवं उनसे छुटकारा पाने एवं उन्हें भारत से खदेड़ देने की प्रबल आकांक्षा रखते थे। इस बुढ़वामंगल में - चिरगांव, चरखारी, जैतपुर, जालौन, झांसी, खड्डी पुरवा, शाहगढ़, सरीला, जिगनी, दुधई, बिजना, तरौंहां, विजय राघवगढ़, बानपुर, टोड़ी फतेहपुर, ओरछा, छतरपुर, पन्ना, बिजावर, आलीपुर, झींझन, राहतगढ़, बांदा, अजयगढ़, कोठी, मैहर, नागोद, गुहारवल, सुहागपुर, बहरौली, बंका पहाड़ी, बिरहवेरी, लुगासी, दतिया, सागर एवं कालिंजर आदि के राजा अथवा उनके प्रतिनिधि आए थे।

बुढ़वामंगल में नावों को बांधकर विशाल मंच बनाए गए। सभी राजाओं ने सर्वसम्मति से जैतपुर राजा पारीछत की योग्यता, साहस, निर्भीकता, ओजस्विता एवं नेतृत्व क्षमता को देखकर उन्हें इस बुढ़वामंगल सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया। नाव द्वारा मंच पर एक ओर नृत्य संगीत का कार्यक्रम चलता रहा तो उसकी आड़ में दूसरी ओर बुंदेलखण्ड के राजे-रजवाड़े अंगरेज विरोधी रणनीति बनाने में जुटे हुए थे। सभी राजाओं ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी दौरान भारतीय स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव पारित किया गया। सर्वसम्मति से राजा पारीछत को अंगरेज विरोधी आन्दोलन की बागडोर सौंप दी गई। महाराज पारीछत द्वारा सम्मेलन में व्यक्त विचारों का अनुमोदन किया गया। राजा पारीछत को हर प्रकार से अंगरेजों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए सहयोग देना स्वीकार किया।

बुढ़वामंगल में निर्मित रणनीति पर अमल करते हुए राजा पारीछत ने बुन्देलखण्ड के राजाओं को एकजुट करना आरंभ किया। अपने विश्वसनीय सेवक सिमरिया के किलेदार बखत कनोजिया के हाथ सागर के नाराहट ग्राम के मधुकरशाह, घुवेरा के राजा बलवंत सिंह, राजा शिवनाथ, होशंगाबाद के पास दिलहरी फतेहपुर के राजा जालिम सिंह एवं हीरापुर के राजा हिरदेशाह के पास गुप्त संदेश भेजे। इस प्रकार राजा पारीछत ने विभिन्न राजे-रजवाड़ों को संदेश भेजकर अंगरेज विरोधी मोर्चा तैयार करने के हर संभव प्रयास किए। अपनी रणनीति को अंजाम देने के लिए 1842 में इन्होंने अंगरेजों के विरुद्ध बुन्देला विद्रोह का आगाज किया। समय का चयन भी इन्होंने बहुत सोच समझ कर किया था क्योंकि इस समय अंगरेजों की अधिकांश सेना अफगानिस्तान युद्ध में न केवल फंसी हुई थी, अपितु उसे वहां पराजय का सामना भी करना पड़ा था। अफगानिस्तान युद्ध में अंगरेजों के 16,379 सैनिक मारे गए थे।

बुन्देला विद्रोह का नेतृत्व सागर में मधुकरशाह, सागर के उत्तर-पूर्व में राजा पारीछत एवं सागर के दक्षिण-पूर्व में हीरापुर के राजा हिरदेशाह ने किया था। इस विद्रोह का प्रमुख केन्द्र सागर था। विद्रोह का आरंभ भी नाराहट के मधुकरशाह ने 8 अप्रैल 1842 को किया। मधुकरशाह एवं हिरदेशाह यद्यपि बुढ़वामंगल में नहीं गए थे तथापि उन्होंने सागर एवं नरसिंहपुर क्षेत्र में अंगरेज इलाकों पर कब्जा जमा लिया।

राजा पारीछत ने भी अंगरेजों के विरुद्ध जमकर युद्ध किया मगर बुढ़वामंगल में जैतपुर के आसपास के जिन राजाओं ने भाग लिया था उन्होंने पारीछत का साथ नहीं दिया। वे सभी दगा दे गए। राजाओं की दगा का वर्णन पारीछत को कटक में इस प्रकार मिलता है।

कर कूच जैतपुर से बगौरा पै मेले
चौगान पकर गये मंत्र अच्छौ खेले
बगसीस भई ज्वानन खां पगड़ी सेले
सब राज दगा देगये नृप लड़े अकेले।

अर्थात महाराज पारीछत जैतपुर से कूच कर बगौरा पहुंचे। अश्वों का खेल (चौगान) खेलते हुए रणनीति बनाई। सभी जवानों को सेला और पगड़ी बांटी। मगर सभी राजाओं ने पारीछत को दगा दिया और ये सहयोग के लिये नहीं आये, परिणामस्वरूप पारीछत को अकेले लड़ना पड़ा। राजा परास्त हुआ और उसे अपनी रानी सहित जंगलों में भटकना पड़ा। परास्त होने के पहले जैतपुर राजा पारीछत ने बगौरा के पूर्व के 2-3 युद्धों में अंगरेजों को करारी शिकस्त दी थी।

अंगरेजों ने हीरापुर के राजा हिरदेशाह एवं नाराहट के मधुकरशाह को पकड़ लिया। इससे बुन्देला विद्रोह की तीव्रता समाप्त हो गई। धीरे-धीरे बुन्देला विद्रोही या तो पकड़े गए या उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। पारीछत आखिर कब तक अकेले लड़ते। अंगरेजों की मित्र ओरछा की रानी की सूचना पर अक्टूबर 1844 में जोरन के महल से राजा पारीछत को गिरफ्तार कर लिया गया।

यही कारण था कि राजा पारीछत यद्यपि अत्यन्त बहादुरी से लड़े, मगर अन्ततः उन्हें बगौरा के युद्ध में पराजय का सामना करना पड़ा। उनकी पराजय के बाद भी उनके द्वारा प्रज्वलित स्वाधीनता की चिन्गारी बुन्देलखण्ड में जलती रही एवं उसने 1857 की क्रांति में रौद्र रूप धारण कर अंगरेजों की जड़ें हिला कर रख दीं। इसीलिए आज भी राजा पारीछत लोकगीतों में अमर हैं। लोक गायक ने ठीक ही कहा है -

'राम रची सो होय, लड़ाई तैंने खूब लड़ी
जुग-जुग जियो पारीछत लड़ाई तैंने जेर करी।'

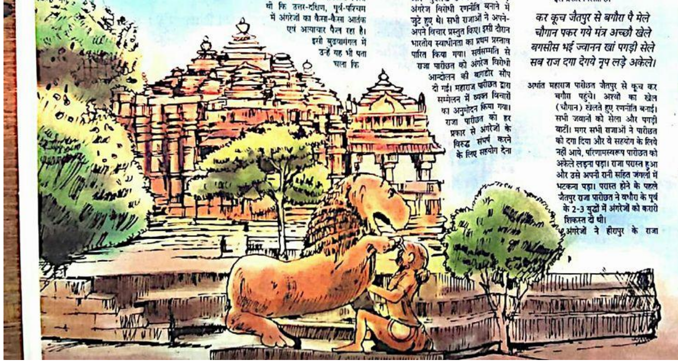

प्रो. बी. के. श्रीवास्तव
इतिहास विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

उजाले की ओर आपके साथ, आपके हाथ आपका भास्कर

पीछे मुड़कर देखने पर उजाला चकाचौंध कर देता है। पौराणिक आख्यानों और हजारों बरस पुराने अतीत के उल्लेख से बचें तब भी महाराज छत्रसाल की निपुणता और आल्हा-ऊदल के शौर्य की कहानी बिसराई नहीं जा सकती। 1857 के युद्ध में बुंदेलखंड में खूब लड़ी मर्दानों की कहानी थी। तात्या टोपे थे। उनके साथ अनेक बुंदेले वीर थे। फिरंगी शासन के विरोध की मेरठ से फैली बगावत से पहले बुंदेलखंड में छतरपुर के कमांडर देशपाल ने 1851 में खुला विद्रोह किया था। अंगरेजों ने कुछ देशी रियासतों को ललचाया। धमकाया। कुछ अन्य को भड़काया। आपस में लड़वाया। इसके बावजूद देशपाल ने दिसंबर 1858 तक फिरंगियों को छकाया। सताया। इस इलाके को मुक्त रखा। नौगांव छावनी में बगावत हुई। सशस्त्र क्रांति और अहिंसक दोनों तरीकों से देश को स्वाधीन करने की बुंदेली परम्परा जारी रही। विकास और समता की दौड़ में आगे बढ़ने की ललक तब भी कायम थी। बनारसी दास चतुर्वेदी ने पाठकों को जागरूक करने के लिए मधुकर को हथियार बनाया। कुंडेश्वर में बुनियादी संस्था शुरू कर सक्षमीकरण की दिशा में ठोस प्रयास किया। अंचल के समाजसेवियों ने उन दिनों अलग बुंदेलखंड की मांग किसी निजी अपेक्षा के लिए नहीं की थी। अंचल का विकास एकमात्र लक्ष्य था। राजनीतिक हठ के कारण बुंदेलखंड अंचल को काटकर मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में बांट दिया गया। कायम रहा असंतोष और पिछड़ापन। स्वतंत्रता के पहले के आंकड़ों में उलझने की जरूरत नहीं है। पहली पंचवर्षीय योजना से लेकर अब तक अंचल में कृषि, शिक्षा, चिकित्सा, स्वच्छ पेयजल की दिशा में क्या और कितना पाया? सूखा और किसान आत्महत्या पहचान बनी। सड़क, रेल और विमान सेवा की उपेक्षा के कारण परिवहन, पर्यटन और उद्योग-व्यापार में भूभाग में शून्य ही शून्य उपजे।

अतीत के सागर में गहरी डुबकी मारकर नायाब मोती खोजना कठिन नहीं है। अतीत हमें सावधान करता है। इतिहास चेतावनी देता है- चौकन्ने रहो। तथ्यों का संयम के साथ शांत मन से आकलन करो। सबक लो। आगे बढ़ो। भविष्य संवारो। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने कहा था- हम कौन थे, क्या थे और क्या होंगे अभी? आओ विचारें आज मिलकर हम सभी। हीन भावना से मुक्त होकर। गर्व को अहंकार बनने से बचाते हुए। कुछ इतिहासकार अंगुली उठाते हैं कि ओरछा के राजा प्रताप सिंह ने 1877 में एडवर्ड सप्तम के दरबार में जाकर हाजिरी दी। उन्हें नहीं भूलना चाहिए कि 1877 में टीकमगढ़ में कन्या पाठशाला शुरू की। नर-नारी समता की दिशा में यह बड़ी क्रांति थी। नए दौर में पुराने संदर्भ को परिभाषित करें। इस वीर भूमि में भाभी पर आक्षेप का बचाव करने वीर हरदौल ने प्राण उत्सर्ग किए। लक्ष्मण की भाभी-भक्ति को पीछे छोड़ा। इस अंचल में किसी महिला पर अत्याचार से हम लज्जित हों। रक्षक बनें। बुंदेलखंड अंचल के किसी पन्ने पर आपसी कलह की इबारत न लिखी जाए।

छतरपुर से दैनिक भास्कर का प्रकाशन महज एक अखबार की शुरुआत नहीं है। मिलजुलकर नया इतिहास रचने का वक्त आ चुका है। छतरपुर, टीकमगढ़ जिलों सहित पूरे अंचल को विकास के उजाले से आलोकित करने के लिए दैनिक भास्कर आपका सारथी है। साथी है। आइए। कदम बढ़ाएं।

शुभकामना सहित

प्रकाश दुबे
समूह संपादक

दैनिक भास्कर
26-Feb-2020
सागर Page 6

dainikbhaskar.com

दैनिक भास्कर सागर, बुधवार, 26 फरवरी, 2020

गोष्ठी• रतौना आन्दोलन के सौ वर्ष पूरे होने पर स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने की उठी मांग

100 साल पहले रतौना में पशुवध केंद्र के विरोध में सबसे पहले अब्दुल गनी ने खड़े होकर पेश की थी सद्भाव की मिसाल: प्रो. बीके श्रीवास्तव

भास्कर संवाददाता | सागर

अंग्रेजी शासन काल के दौरान वर्ष 1920 में सागर के रतौना में खोले जाने वाले पशुवध केन्द्र के विरोध में भाई अब्दुल गनी और पं. माखनलाल चतुर्वेदी के नेतृत्व में हुए देशव्यापी आंदोलन के 100 वर्ष होने पर मप्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन सागर द्वारा मंगलवार को सिविल लाइन में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफेसर बीके श्रीवास्तव थे। जिन्होंने रतौना आन्दोलन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि अंग्रेजों ने रतौना में 1920 ई. में कसाई खाना खोलने की योजना बनाई, इसमें 1400 गाय-बैल प्रतिदिन काटे जाने थे।

3 जुलाई के बाद समाचार पत्रों में इसका विज्ञापन पूरे 3 पृष्ठों में छापा गया। जिसमें कसाई खाने के लाभ दिखाते हुए इसके अधिक से अधिक शेयर लेने की जनता से अपील की गई। इसमें स्पष्ट कहा गया कि सिर्फ गाय बैल काटे जाएंगे सूअर नहीं। यह इसलिए कहा गया ताकि मुस्लिम इसके विरोध से दूर रहें। परंतु अंग्रेजों का दांव उस समय गलत पड़ गया, जब इस कसाई खाने का सबसे पहला विरोध ही एक 25 वर्षीय मुस्लिम युवक भाई अब्दुल गनी ने किया। समाचार पत्र के माध्यम से भी इसका विरोध जबलपुर के ताजुद्दीन ताज ने अपने समाचार पत्र के माध्यम से किया। जिस पर सरकार ने उनके विरुद्ध मुकदमा चलाया और उन्हें जेल भेज दिया गया।

अब्दुल गनी ने समस्त साथियों को इस आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित किया। पं. माखनलाल चतुर्वेदी जबलपुर पहुंचे और उन्होंने अपने समाचार पत्र कर्मवीर के माध्यम से कसाई खाने का विरोध किया। लाला लाजपत राय ने अपने समाचार पत्र वंदे मातरम और मदन मोहन मालवीय ने लीडर के माध्यम से इसका विरोध किया। जब रतन कसाई खाने विरोधी आंदोलन का प्रस्ताव कोलकाता में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में रखा जाना था तब सरकार इतनी घबरा गई कि उसने टेलीग्राम के माध्यम से पंडित विष्णु दत्त शुक्ला को सूचना दी कि कसाई खाने की योजना त्याग दी गई है। यह सागर की धरती पर अंग्रेजों की एक नैतिक एवं प्रशासनिक हार थी। इस महत्वपूर्ण रतौना आंदोलन को स्कूली पाठ्यक्रमों में भी शामिल कराया जाना चाहिए ताकि बच्चों में राष्ट्रीय चेतना का भाव विकसित हो।

विचार गोष्ठी के दौरान रतौना आंदोलन पर चर्चा करते वक्ता।

गांव-गांव घूमकर आंदोलन की जमीन तैयार की

गोष्ठी के विशिष्ट अतिथि स्व.अब्दुल गनी के पुत्र रफीक गनी ने अपने पिता के रतौना आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने गांव-गांव घूमकर आंदोलन की जमीन तैयार की। माखनलाल चतुर्वेदी के समाचार पत्र कर्मवीर के वे संवाददाता थे जिसके माध्यम से उन्होंने इस आंदोलन को दूर-दूर तक पहुंचाने का काम किया। गोष्ठी के मुख्य अतिथि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ सागर के अध्यक्ष शिवशंकर केसरी और अध्यक्ष आशीष ज्योतिषी ने रतौना आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण पहलू प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के दौरान गायक शिवरतन यादव ने महात्मा गांधी के प्रिय भजन वैष्णव जन तो का गायन किया। संचालन डॉ. महेश तिवारी ने किया और आभार मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन की उपाध्यक्ष डॉ. चंचला दवे ने माना। गोष्ठी में डॉ.गजाधर सागर, उमाकांत मिश्र, केएल तिवारी, आरके तिवारी, वृंदावन राय सरल, डॉ.अलीम अहमद खान, एमडी त्रिपाठी, राघव रामकरण, प्रभात कटारे, कपिल चौबे आदि मौजूद थे।

Class Rooms

पुण्य स्मरण दिवस

HISTORY
DEPARTMENT
HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES